Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा- दसवीं विषय- हिन्दी साहित्य
शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - 'साहित्य सागर'

पाठ-7 संदेह (कहानी) लेखक - जयशंकर प्रसाद

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या बयालीस (42) पर दिए पाठ-7 'संदेह' नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम पाठ-7 'संदेह' कहानी का आरंभ करने जा रहे हैं। इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक निकाल लें साथ ही साहित्य की उत्तर-पुस्तिका लेकर बैठें। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएंगे। उन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आपको तीन मिनट दिए जाएँगे। प्रश्नों के उत्तर आप तभी लिख पाओगे यदि आप अपना ध्यान पाठ पर ही केन्द्रित रखेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित 'संदेह' कहानी मनुष्य के मनोविज्ञान पर आधारित है। इस कहानी में लेखक ने विभिन्न पात्रों की मानसिक स्थिति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है। मनुष्य परिस्थिति के आधार पर अन्य व्यक्तियों के हाव-भाव, संवाद के आधार पर, अपनी एक सोच निश्चित कर लेता है। जो कभी-कभी संदेह का रूप धारण कर लेती है अर्थात्

परिस्थितियाँ कभी-कभी संदेह को जन्म देती हैं, यह संदेह वास्तविकता से परे होते हुए भी हमारे दिल-दिमाग में घर कर लेते हैं। यह संदेह मानव की मानसिकता को भी प्रभावित करते हैं। कभी-कभी व्यक्ति संदेह के वश में होकर पागल भी हो जाता है अर्थात् व्यक्ति उचित-अनुचित में भेद नहीं कर पाता और वह मानसिक रोग का शिकार बन सकता है। लेखक के अनुसार इस प्रकार के संदेह को दूर करना आवश्यक है क्योंकि ऐसे संदेह समस्याओं को ही जन्म देते हैं।

बच्चो! आइए, अब इस कहानी के पात्रों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। इस कहानी के पात्र हैं :- रामनिहाल, श्यामा, मनोरमा, मोहन बाबू, ब्रजकिशोर बाबू। अब हम इन पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं के बारे में विस्तार में जानकारी प्राप्त करेंगे।

पात्र - परिचय

1. रामनिहाल - रामनिहाल एक पढ़ा-लिखा युवक है। वह गृहहीन है। उसका अपना कोई नहीं है। वह चतुर है पर अपनी महत्त्वकांक्षाओं के कारण भारत के अलग-अलग प्रदेशों में छोटा-सा व्यवसाय और नौकरी करता रहता था। वह बंजारे की तरह अपना संदूक और थोड़ा-सा सामान लेकर यहाँ-वहाँ घूमता रहता था। कभी-कभी वह सोचता था कि मैं सुखी और संतुष्ट होकर चैन से संसार में किसी एक जगह रहूँगा लेकिन फिर उसे लगता कि यह एक मृग-मरीचिका (ऐसी तृष्णा जो संभव न हो) थी। उसे यह भी लगता है कि मनुष्य अधिक चतुर होकर भगवान की दया से वंचित हो जाता है। वह स्वयं को अभागा समझता है। जब रामनिहाल, श्यामा के घर आता है, तब उसे लगता है कि उसे घर मिल गया। लेकिन अब वह श्यामा के घर से भी जाना चाहता है। मनोरमा ने सहायता के लिए उसे जो पत्र लिखे, उन पत्रों से उसे संदेह हो गया कि मनोरमा उसकी ओर

आकर्षित है। श्यामा को वह अपना शुभचिंतक मानता है। उसे यह लगता है कि वह श्यामा की ओर आकर्षित है। इस प्रकार वह अस्थिर व्यक्ति है। इसके अतिरिक्त वह शिक्षित, महत्त्वाकांक्षी एवं भावुक व्यक्ति है।

2. श्यामा - श्यामा एक विधवा है। वह सुचरित्रा और बुद्धिमान है। रामनिहाल उसे शुभचिंतक, मित्र और रक्षक समझता था। वह समझदार भी है। उसे क्रोध नहीं आता। रामनिहाल के संदेह को दूर कर वह उसे मनोरमा की सहायता के लिए भेजती है और उसे कुछ दिनों के बाद पास आ जाने का आग्रह करती है।

3. मनोरमा - मनोरमा पतिव्रता है पर उसके पति मोहन बाबू उस पर संदेह करते हैं। वह सुंदर स्त्री है। वह पति के आरोपों से परेशान होती है और रामनिहाल से कहती है कि मेरी विपत्ति में आप सहायता कीजिएगा। वह मोहन बाबू के पागल होने पर पत्र लिखकर रामनिहाल की सहायता के लिए बुलाती है।

4. मोहन बाबू - मोहनबाबू एक भावुक व संवेदनशील व्यक्ति हैं। उनकी स्थिति दयनीय है। उनका दूर का रिश्तेदार ब्रजकिशोर उनकी संपत्ति का प्रबंधक बनने के लिए उन्हें बनाना चाह रहा है। मोहन बाबू को संदेह है कि उनकी पत्नी मनोरमा ब्रजकिशोर से मिली हुई है। गंगा में दीपदान का अर्थ समझाते समय उनकी कल्पना-शीलता भी दिखाई देती है। उनके मन में संदेह की अधिकता इतनी है कि वे पागलपन की ओर बढ़ रहे हैं। वह खुद कहते हैं कि संसार की विश्वासघात की लोकरों ने मेरे हृदय को विक्षिप्त (परेशान) बना दिया है।

बच्चो! अब इस कहानी को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। रामनिहाल, श्यामा नाम की एक विधवा औरत के घर किराए पर रहता है। वह अपना बिखरा

सामान बाँधने में लगा है। वह श्यामा का घर छोड़कर जा रहा है। जंगले में से धूप आकर सीधे छोटे-से शीशे पर पड़ रही थी। स्वच्छ प्रकाश खण्ड छोटे-से शीशे से होता हुआ बुद्ध की सुन्दर मूर्ति पर पड़ रहा था। किन्तु बुद्ध की मूर्ति ध्यानमग्न थी अर्थात् मूर्ति की आँखें बन्द थी। धूप पड़ने पर भी उस मूर्ति की आँखें चौंधियाती नहीं थी। मूर्ति, शांत, गंभीर और प्रसन्न प्रतीत हो रही थी। बुद्ध की मूर्ति की मुसकान चमक पड़ने के कारण स्पष्ट दिखाई दे रही थी। परन्तु रामनिहाल मूर्ति की ओर देख नहीं रहा था, उसका ध्यान मूर्ति की ओर नहीं था। उसके हाथों में कागज़ों का एक बंडल था, जिसे संदूक में रखने से पहले वह खोलकर पढ़ना चाहता था परन्तु ऐसा करने से वह स्वयं को रोक रहा था। उसकी स्थिति ऐसी थी जैसे खतरे की आशंका होने से कोई बालक को उस काम को करने से अथवा खतरे से बचाने के लिए रोकता है। उसने बण्डल तो रख दिया लेकिन दूसरा बड़ा सा लिफ़ाफ़ा जिसमें एक चित्र था, को खोल कर रोने लगा।

कमरे में दो मूर्तियाँ थीं। एक बुद्ध देव की, जो ध्यान मग्न थी। प्रकाश के कारण प्रतिमा का मुख प्रसन्न था। दूसरी प्रतिमा रामनिहाल की थी जो एक अचल व्यक्ति की तरह दुःखी एवं चिंतित प्रतीत हो रहा था। जिस प्रकार पर्वतों का जल झरने से होता हुआ नदी में बहता है, उसी प्रकार रामनिहाल का हृदय पिघलकर आँखों से होता आँसुओं के रूप में बह रहा था।

बच्चो ! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट का विराम देंगे एवं इसके अंतर्गत आप पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. रामनिहाल के हाथों में क्या था ?

प्रश्न 2. कमरे में कौन-कौन सी दो प्रतिमाएँ थीं?

प्रश्न 3. रामनिहाल की आँखों में आँसू कैसे आए?

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दी गई तीन मिनट की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. रामनिहाल के हाथ में कागज़ों का एक बंडल था, जिसे संदूक में रखने से पहले वह खोलना चाहता था।

उत्तर 2. कमरे में दो प्रतिमाएँ थीं - बुद्ध देव की और रामनिहाल की।

उत्तर 3. अपना सामान बाँधते हुए रामनिहाल को एक बड़ा-सा लिफ़ाफ़ा भी मिला। लिफ़ाफ़े को खोलने पर एक चित्र निकला, उस चित्र को देख रामनिहाल की आँखों में आँसू आ गए।

बच्चो! अब कहानी को आगे बढ़ाते हुए समझने का प्रयास करते हैं। रामनिहाल अपने कमरे में चुपचाप रो रहा था। तभी किशोरी, जो श्यामा को भाभी कहकर बुलाती है, रामनिहाल को रोते हुए देखकर शोर मचा देती है और अपनी भाभी श्यामा को यह बात बता देती है। श्यामा, रामनिहाल के पास आकर खड़ी हो जाती है लेकिन रामनिहाल, श्यामा के आने पर भी उसी भाव में स्वयं को भूला हुआ रो रहा था। जब श्यामा ने उसके दुःखी होने का कारण पूछते हुए कहा कि क्या हमसे कोई अपराध हो गया है तब रामनिहाल श्यामा से माफ़ी माँगता है और आँसू पोंछते हुए श्यामा को बताता है कि वह प्रायश्चित करना चाहता है इसलिए रो रहा है।

श्यामा, रामनिहाल की बात सुनकर सावधान हो गई क्योंकि कमरे में किशोरी भी खड़ी थी और बातें सुन रही थी। श्यामा ने किशोरी को धूप में फैले कपड़ों

को देखने के बहाने बाहर भेज दिया। किशोरी के जाते ही श्यामा एक चटाई खींचकर रामनिहाल के पास उसकी बात सुनने के लिए बैठ गई। उसके सामने बुद्ध की छोटी-सी प्रतिमा कीमती लकड़ी की बनी सुन्दर मेज़ पर धूप की परछाईं में हँसती हुई-सी मालूम हो रही थी।

रामनिहाल अपने मन की बात श्यामा से कहता है कि तुम्हारे अकेले रहने का कठोर व्रत, विधवा होने पर भी तुम्हारे अकेले रहने का निर्णय, यह सब देखकर मुझे विश्वास हो गया कि मनुष्य अपनी इच्छाओं पर काबू पा सकता है। तुम्हारा सहारा मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है। रामनिहाल ऐसा इसलिए कह रहा है क्योंकि वह श्यामा से विवाह करना चाहता था। उसे लगता था कि वह श्यामा का दिल जीत लेगा परन्तु श्यामा ने तो अपने हृदय की कोठरी को मंदिर बना दिया है अर्थात् श्यामा अपने विधवा जीवन का पालन कठोरता और संयम से कर रही है। रामनिहाल को वह कहाँ प्राप्त हो सकता था।

रामनिहाल एक शिक्षित युवक है। जब वह नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था तो वह श्यामा के घर किराए पर रहने के लिए आया। रामनिहाल को विश्वास हो गया मानो उसने घर पा लिया। रामनिहाल बचपन से ही अनाथ था। उसने अपने संदूक और थोड़े-से सामान को ही अपने उत्तराधिकार का अंश बताया। वह सामान अपनी पीठ पर लादे इधर-उधर घूम रहा था। वह अच्छी नौकरी, अच्छा जीवन पाने के लिए भटक रहा था ठीक उसी प्रकार जैसे कंजर (एक यायावार (विचरने वाली) जाति अथवा घुमक्कड़ लोग या ख़ानाबदोश) अपनी गृहस्थी टट्टू (छोटे कद का घोड़ा) पर लादकर घूमता है।

बच्चो! आज हम अपनी कहानी को यहीं विराम

देते हैं। कहानी का शेष भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। सभी छात्र आज हमने जितना भी पढ़ा है और समझा है, उसे पुनः पढ़कर समझने का प्रयास करेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य देने जा रही हूँ। इस कार्य को आप पाठ की सहायता से साहित्य की उत्तर - पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"मैं चतुर था, इतना चतुर जितना मनुष्य को न होना चाहिए क्योंकि मुझे विश्वास हो गया है कि मनुष्य अधिक चतुर बनकर अपने को अभागा बना लेता है और भगवान की दया से वंचित हो जाता है।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन हैं ? उसने श्रोता से अपने मन की बात किस प्रकार बताई ?

प्रश्न (ii) अपनी महत्त्वाकांक्षा तथा उन्नतिशील विचारों के बारे में वक्ता ने क्या कहा ?

प्रश्न (iii) वक्ता ने श्रोता से किस घटना का उल्लेख किया ?

प्रश्न (iv) क्या आप वक्ता के उपर्युक्त कथन से सहमत हैं ? कारण सहित बताइए।

धन्यवाद ।

[अंतिम पृष्ठ]